एक दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी

भारत के वर्तमान परिप्रेक्ष्य में डॉ. भीमराव अंबेडकर एवं पंडित दीनदयाल उपाध्याय का सामाजिक दर्शन

19th September 2024

गुरु घासीदास विश्वविद्यालय, बिलासपुर, छत्तीसगढ़

एवं

भारतीय सामाजिक विज्ञान अनुसंधान परिषद (आई.सी.एस.एस.आर.) नई दिल्ली

कार्यक्रम स्थल

रजत जयंती सभागार, गुरु घासीदास विश्वविद्यालय, बिलासपुर, छ.ग.

Rajat Jayanti Sabhagar, Guru Ghasidas Vishwavidyalaya (A Central University), Bilaspur, Chhattisgarh.

PATRON

Prof. A.S. Ranadive
Registrar, GGV

CHIEF PATRON

Prof. Alok Kumar Chakrawal
Hon'ble Vice-Chancellor, GGV

CONVENOR

Prof. Ramakrushna Pradhan
Head, Dept. of Political Science
Dean, School of Social Science

ADVISORS

PROF. SHAILENDRA KUMAR

DSW, GGV

PROF. BHARTI AHIRWAR

Head, Department of Pharmacy

Organizing Secretaries

Dr. Santwana Pandey
Assistant Professor, Department of Political Science
&
Dr. Ram Babu
Assistant Professor, Department of Political Science

Organising Committee

Prof. Anupama Saxena- Professor, Department of Political Science
Dr. Amit Kumar Gupta – Associate Professor, Department of Political Science
Dr. Nahid Hassan – Assistant Professor, Department of Political Science
Akash Tawar- Faculty, Department of Political Science
Amit Kumar Bhagat- Faculty, Department of Political Science

विषय सार

किसी भी देश के ज्ञान परम्परा का जुडाव उस देश कि विचारों एवं सांस्कृतियों से बहुत गहरे रूप से जुड़ा होता है, जिसके अध्ययन के लिए भारतवर्ष की सामाजिक एवं राजनीतिक स्थितियां - परिस्थितियां, वैशेषिक संवाद कौशल एवं ज्ञान मीमांसा की अटल गहराईयों का मूल्यांकन करने के लिए डॉ. भीमराव अंबेडकर और पंडित दीन दयाल उपाध्याय की वैचारिक विरासत का अध्ययन अत्यंत महत्वपूर्ण हैं। भारतीय राजनीतिक चिंतन के दैदीप्यमान नक्षत्र के रूप में उपरोक्त महान विचारकों ने न सिर्फ अपने समय के समाज एवं राज्य सुधार की प्रक्रिया में अभूतपूर्व योगदान दिया बल्कि उनकी वैचारिक ज्ञान मीमांसा वर्तमान भारत को भी समझने और दिशा देने का भागीरथ प्रयास कर रही हैं। जहाँ पर डॉ. अंबेडकर का दृष्टिकोण जातिगत विषमता, अवसरों की असमानता एवं सामाजिक अन्याय के विरुद्ध था, तो वहीं पंडित दीनदयाल उपाध्याय ने भारतीय संस्कृति और स्वदेशी मूल्यों पर आधारित सामाजिक दृष्टिकोण प्रस्तुत किया जो कि मूल रूप में संकीर्ण मानसिकताओं से परे भारतवर्ष की छवि को पूरी दुनिया में स्थापित करने का उद्देश्य रखता है। इस संगोष्ठी का उद्देश्य उनके सामाजिक दार्शनिक विचारों की वर्तमान सामाजिक आचार एवं व्यवहार से तुलना करते हुए वर्तमान भारतीय संदर्भ में उनके विचारों की प्रासंगिकता पर चर्चा करना है। डॉ. बी.आर. अंबेडकर और पंडित दीनदयाल उपाध्याय के सामाजिक दर्शन में छिपे गूढ रहस्यों का पता लगाना एवं उसमे छिपी उत्तरोत्तर प्रगति की असीम संभावनाओं को खोजना है, ये दोनो प्रभावशाली व्यक्तित्व क्रन्तिकारी विचारक होने के साथ ही निरंतर तीव्र परिवर्तन के अग्रदूत रहे हैं, जिनकी विचारधाराओं ने आधुनिक भारत को भिन्न-भिन्न प्रकार से समझने का आधार प्रदान किया है। सामाजिक न्याय एवं समरसता के हिमायती डॉ. अंबेडकर और एकात्म मानवतावाद और पारंपरिक मूल्यों के समर्थक पंडित दीनदयाल उपाध्याय सामाजिक संगठन और शासन पर विपरीत परन्तु मूल्यवान दृष्टिकोण प्रस्तुत करते हैं। समकालीन भारत के संदर्भ में, उनका दर्शन वर्तमान सामाजिक चुनौतियों और नीति-निर्माण को संबोधित करने की अंतर्दृष्टि प्रदान करता है.

संगोष्ठी का उद्देश्य

1. डॉ. अंबेडकर और पंडित दीनदयाल उपाध्याय के सामाजिक दर्शन के मूल सिद्धांतों को समझना। और विश्लेषण करना कि ये दर्शन समकालीन भारत में सामाजिक न्याय, समानता और शासन के मुद्दों को कैसे संबोधित करते हैं।
2. वर्तमान सामाजिक-राजनीतिक और आर्थिक परिदृश्य में उनके विचारों की प्रासंगिकता और अनुप्रयोग का मूल्यांकन करना।

संगोष्ठी के मुख्य विषय

वर्तमान आर्थिक संरचनागत जटिलताएं एवं डॉ. बी. आर. अंबेडकर दर्शन

डॉ. बी. आर. अंबेडकर का सामाजिक गतिशीलतावाद

भारतीय न्याय व्यवस्था एवं सामजिक अनुकूलन

साहित्यिक मीमांसा एवं आधुनिक वैश्विक समाज

सामाजिक न्याय की अवधारणा एवं वर्तमान समाज

डॉ. बी. आर. अंबेडकर का सामाजिक दर्शन

पंडित दीनदयाल उपाध्याय का सामाजिक दर्शन

संगोष्ठी के उप-विषय

सामाजिक न्याय और समानता (डॉ. बी. आर. अंबेडकर)

जाति व्यवस्था की आलोचना (डॉ. बी. आर. अंबेडकर)

शिक्षा और सशक्तिकरण (डॉ. बी. आर. अंबेडकर)

एकात्म मानववाद (पंडित दीनदयाल उपाध्याय)

पारंपरिक मूल्य और आधुनिकता (पंडित दीनदयाल उपाध्याय)

ग्राम आधारित विकास (पंडित दीनदयाल उपाध्याय)

दार्शनिक विचलन और अभिसरण (तुलनात्मक विश्लेषण)

नीति और शासन पर प्रभाव (तुलनात्मक विश्लेषण)

वर्तमान सामाजिक मुद्दों को संबोधित करना (समकालीन प्रासंगिकता)

नीतिगत निहितार्थ (समकालीन प्रासंगिकता)

Link for registration

https://docs.google.com/forms/d/e/1FAIpQLSfR4saGWp4qhIG4mJ1x5DrR2NXtJOwDyT0P-may1AzejxUXiA/viewform?usp=pp_url

SCAN THIS QR FOR REGISTRATION

CALL FOR PAPER AND SUBMISSION GUIDELINES
(शोध पत्र के लिए आमंत्रण और प्रस्तुतिकरण संबंधी दिशानिर्देश)

सारांश अपलोड करने के लिए कृपया सारांश प्रस्तुतीकरण फॉर्म भरें।

उद्धरण और संदर्भ की APA 7th edition शैली का अनुपालन करना होगा । सारांश 250-300 शब्दों में होना चाहिए।

प्रतिभागियों को अपना शोधपत्र अंग्रेजी या हिंदी में भेजना होगा।

कार्यक्रम के लिए पंजीकरण ऑनलाइन माध्यम से स्वीकार्य होगा ।

Author and Co-author's दोनों के लिए पंजीकरण अनिवार्य है।

सभी पंजीकृत प्रतिभागियों को भागीदारी के प्रमाण पत्र जारी किए जाएंगे।

एक से अधिक लेखकों के विषय में, प्रमाण पत्र केवल पंजीकृत लेखक(ओं) को जारी किए जाएंगे।

यदि कोई लेखक दो शोधपत्र प्रस्तुत करता है, तो दोनों शोधपत्रों को अलग-अलग पंजीकृत करना होगा ।

NOTE

प्रतिभागियों के पास शोधपत्र वाचन मौखिक रूप से या पोस्टर के माध्यम से प्रस्तुत कर सकते हैं ।

(Participants have the option of presenting their work orally or through Poster presentations)

Guidelines for Poster Presentation

पोस्टर का आकार पोर्ट्रेट ओरिएंटेशन में A0 (84.1 सेमी x 118.9 सेमी) होना चाहिए।

इसमें प्रस्तुतकर्ता लेखक के लेखन, संबद्धता और संपर्क विवरण स्पष्ट रूप से शामिल होने चाहिए।

सुनिश्चित करें कि पाठ और ग्राफ़िक्स कम से कम 1 मीटर की दूरी से स्पष्ट रूप से पठनीय हों।

पठनीयता से समझौता किए बिना पोस्टर को आकर्षक बनाने के लिए रंग कंट्रास्ट का उपयोग करें।

Format for Submission (English/Hindi)

Font: Use Times New Roman, 12-point font throughout the document. For Hindi Mangal-12. **Spacing:** The entire document must be Single-spaced, including references, footnotes, and block quotations. **Margins:** Use 1-inch margins on all sides (top, bottom, left, and right). **Alignment:** Justify the text, except for headings and titles, which should be centred. **Reference:** APA7th Edition

पात्रता: कार्यक्रम सभी इच्छुक प्रतिभागियों के लिए खुला है। सभी संकाय सदस्य (नियमित/अस्थायी/तदर्थ/अतिथि), उच्च शिक्षा के शोध विद्वान और स्वतंत्र विद्वान भी सम्मेलन में भाग लेने के लिए स्वागत योग्य हैं।

Important Dates

Submission of Abstracts on or before: 12/09/2024
Communication of acceptance: 13/09/2024
Submission of Full paper (3000-5000 words): On or before 17/09/2024

Registration Fees

Research Scholar: 100/-
Faculty: 250/-

(Payment Instruction)

शोधपत्र सारांश का चयन होने पर राष्ट्रीय संगोष्ठी में भाग लेने के लिए चयनित प्रतिभागियों को पंजीकरण शुल्क का भुगतान करना होगा।
Upon selection of Abstract, the Delegates have to pay the registration fees for participation in the National Seminar

For any queries feel free to contact

Dr. Santwana Pandey (Asst. Professor, Pol. Sc)	Dr. Ram Babu (Asst. Professor, Pol. Sc)
Email- santwanapandey26@gmail.com	Email- rambabuyadav256@gmail.com
Contact- +91- 7697120053	Contact- +91- 8839297245